

अच्छे अंकों से
परीक्षा
पास करने के

रहस्य

- अपना लक्ष्य जानें
- स्वयं को पहचानें
- अच्छी आदत अपनायें
- अपनी योग्यता का विकास करें
- आवश्यकता के अनुसार लक्ष्य अपनायें
- अधिक प्रतियोगी बनें
- बेहतर प्रदर्शन करें



सफलता आपका इंतजार कर रही है।
आगे बढ़ें और परीक्षाओं में विशिष्टता प्राप्त करें।

प्रेम पी. भल्ला

प्रख्यात लेखक, शिक्षाविद् एवं करियर सलाहकार



वी एम् एस पब्लिशर्स

अच्छे अंकों से परीक्षा पास करने के 7 रहस्य

लेखक

प्रेम पी. भल्ला
बी.एस.सी. (ऑनर्स)

अनुवाद

सुमन बाजपेयी



वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक



वी^{एस} एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027 • फ़ैक्स: 011-23240028

E-mail: info@vspublishers.com • Website: www.vspublishers.com

क्षेत्रीय कार्यालय : हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद-500 095

☎ 040-24737290

E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रियल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड

अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034

☎ 022-23510736

E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फॉलो करें:



© कॉपीराइट: वी^{एस} एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-505734-3-3

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत वेबसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

समर्पण

राजीव एवं रीमा

जिन्होंने परीक्षाओं में विशिष्टता हासिल करने
के लिए अपने बच्चों का मार्गदर्शन किया

अंदर के पृष्ठों में

स्वकथन 7
मंत्र 1 — अपना लक्ष्य जानें 9
पहला चरण : क्या हमें परीक्षा की जरूरत है ? 10
दूसरा चरण : आप कहां जा रहे हैं ? 14
तीसरा चरण : प्रेरणा 18
मंत्र 2 — स्वयं को जानें 21
पहला चरण : सीखने की प्रक्रिया 22
दूसरा चरण 2 : स्मरणशक्ति की प्रक्रिया 27
तीसरा चरण : हम क्यों भूलते हैं ? 33
चौथा चरण : स्मरणशक्ति का प्रयोग 35
पांचवां चरण : अपने आपको समझें 42
मंत्र 3 — अच्छी आदत अपनाएं 47
पहला चरण : प्रभावी ढंग से पढ़ना 48
दूसरा चरण : पढ़ने की आदतें 52
तीसरा चरण : सफलता की तैयारी 56
चौथा चरण : अध्ययन की समयसारिणी 60
मंत्र 4 — अपनी योग्यता का विकास करें 63
पहला चरण : संप्रेषण योग्यता 64
दूसरा चरण : भाषा की योग्यता 69
तीसरा चरण : पढ़ने की योग्यता 76
चौथा चरण : सुनने की योग्यता 81
पांचवां चरण : एकाग्रता 86
छठा चरण : नोट्स बनाना 88

मंत्र 5 — आवश्यकता के अनुसार अपनाएं 93
पहला चरण : परीक्षा की आश्चर्यजनक दुनिया 94
दूसरा चरण : स्कूल की परीक्षा 98
तीसरा चरण : कॉलेज की परीक्षा 100
चौथा चरण : प्रोफेशनल कॉलेज परीक्षा 102
पांचवां चरण : शोध-प्रबंध लिखना 104
छठा चरण : अपने परीक्षक को जानें 107
मंत्र 6 — अधिक प्रतियोगी बनें 110
पहला चरण : प्रतियोगी परीक्षा 111
दूसरा चरण : वस्तुनिष्ठ परीक्षा 113
तीसरा चरण : साक्षात्कार से पूर्व की प्रश्नावली 115
चौथा चरण : सामूहिक विचार-विमर्श 118
पांचवां चरण : साक्षात्कार 120
छठा चरण : स्वास्थ्य परीक्षण 127
मंत्र 7 — बेहतर प्रदर्शन करें 129
पहला चरण : बेहतर तैयारी के लिए सहयोग 130
दूसरा चरण : परीक्षा की उत्तेजना और तनाव 133
तीसरा चरण : परीक्षा की तैयारी 135
चौथा चरण : परीक्षा 137
पांचवां चरण : परीक्षा में सफलता 141



स्वकथन

परीक्षा हर व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्कूल में प्रवेश लेते ही इससे सामना हो जाता है। यह कॉलेज और यहां तक कि उसके बाद भी चलती रहती है। उच्च व निम्न दोनों स्तर पर कई नौकरियों में प्रवेश विभिन्न परीक्षाओं पर ही आधारित होता है। यहां तक कि वयस्क जीवन में भी, जहां नियमित रूप से सीखते रहने की आवश्यकता है। परीक्षा सफलता पाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्कूल में विद्यार्थियों को विभिन्न विषय व्यस्क जीवन को सफल बनाने के लिए पढ़ाए जाते हैं। जबकि कोई स्कूल परीक्षा में विशिष्टता प्राप्त करने की बात नहीं सिखाता। अधिकतर छात्र इसे लापरवाही से सीखते हैं, कुछ बहुत देर में समझते हैं तो कुछ बिल्कुल भी नहीं सीख पाते हैं। यह बहुत दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे युवा तक इस ज्ञान से वंचित हैं, जो औसत बौद्धिक स्तर (IQ) के होने के बावजूद परीक्षाओं में अक्वल नहीं आ सकते हैं।

परीक्षाओं में विशिष्टता प्राप्त करने के सात मंत्रों द्वारा कदम-दर-कदम आगे बढ़ने और परीक्षाओं में अक्वल आने के लिए बच्चों को मार्ग दर्शन कराने का प्रयास किया गया है। पूरी पुस्तक में प्रयोग दिए गए हैं, ताकि व्यक्ति अभ्यास के द्वारा सीख सके। हर चरण के बाद ध्यान देने योग्य बातें तकनीक में विद्वता हासिल करने में मदद करेंगी।

आत्मविश्वास प्राप्त करने और परीक्षाओं में बैठने के लिए उचित मार्गदर्शन प्रदान करने में छात्रों की मदद करने हेतु परामर्श भी दिए गए हैं।

परीक्षाओं में उच्च सफलता के 7 मंत्रों को जानें। सफलता आपका इंतजार कर रही है। आगे बढ़ें और परीक्षाओं में विशिष्टता प्राप्त करें।

—प्रेम पी. भल्ला

मंत्र 1

अपना लक्ष्य जानें

आप परीक्षाओं की तैयारी क्यों कर रहे हैं ? और उसमें क्यों बैठ रहे हैं ? आपका लक्ष्य क्या है ? दुर्भाग्यवश इन सरल प्रश्नों का उत्तर भी अनेक छात्र देने में असमर्थ होते हैं। वे यह नहीं बता पाते कि स्कूल या कॉलेज में क्यों पढ़ रहे हैं ? जो इसका उत्तर देते हैं, वे कहते हैं कि ऐसा सर्टिफिकेट, डिग्री या डिप्लोमा पाने के लिए कर रहे हैं। उन्हें इनकी जरूरत क्यों है ? उनके लिए ये शिक्षित होने के प्रमाण हैं और इनके माध्यम से वे एक उचित व्यवसाय चुनकर समाज में एक सम्माननीय स्थान पा सकते हैं।

लेकिन स्कूल और कॉलेज जाने का वास्तविक उद्देश्य सर्टिफिकेट या डिग्रियां पाना नहीं है, वरन् शिक्षित होना है। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शिक्ष् धातु और टाप् प्रत्यय से हुई है। जिसका अर्थ है अंतर्निहित क्षमताओं का बाहर निकलना। शिक्षा व्यक्ति के भीतर छिपी प्रतिभाओं का प्रयोग करने के लिए उसे तैयार करने की एक प्रभावी प्रक्रिया है। जब एक बार किसी को शिक्षा का उद्देश्य समझ में आ जाता है और वह परीक्षा, जो कि प्रक्रिया का एक हिस्सा है, देता है तो व्यक्ति अपने लक्ष्य से अवगत हो जाता है।

अध्ययन के हर स्तर पर परीक्षाएं होती हैं— लिखित परीक्षाएं, व्यावहारिक कार्य में परीक्षाएं, मौखिक परीक्षाएं, सामूहिक रूप से विचार-विमर्श, साक्षात्कार, स्वास्थ्य जांच और अनगिनत अन्य परीक्षाएं। किसी न किसी निश्चित उद्देश्य के लिए इन्हें बनाया गया है। अपनी क्षमता को प्रमाणित करने के लिए आपको परीक्षाओं का उद्देश्य समझकर उसमें उत्तीर्ण होना होगा। आइए, अपने लक्ष्य को जानने के लिए हम एक-एक कदम रखते हुए आगे बढ़ें।

मंत्र 1: पहला चरण

क्या हमें परीक्षा की जरूरत है?

किसी विषय में आपका कितना ज्ञान और काबिलीयत है, परीक्षा यही जानने की औपचारिक प्रक्रिया है। यह किसी व्यक्ति की योग्यताओं या प्रगति को जांचने का भी एक तरीका हो सकता है।

किसी भी शिक्षित व्यक्ति के लिए परीक्षा कोई नई चीज नहीं है। जैसे ही स्कूल में बच्चा प्रवेश लेता है और थोड़ी सी वर्णमाला सीखता है, उसे परीक्षा देनी पड़ती है। अध्यापक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उसने जो पढ़ाया है, वह बच्चे ने सीखा है कि नहीं। छात्र जैसे-जैसे सीखता है, नए पाठ पढ़ाए जाते हैं। परीक्षा और कठिन होती जाती है।

आरंभ में ही शुरू हो जाती है परीक्षा

स्कूल में प्रवेश लेने से पहले से ही परीक्षा आरंभ हो जाती है। बच्चे के बैठने, घुटनों के बल चलने और पहला लड़खड़ाता हुआ कदम लेने पर माता-पिता को बहुत खुशी होती है। उन्हें उसके मुस्कराने और हंसने पर भी उतनी ही खुशी मिलती है, जितनी कि उसके द्वारा पहली बार 'मां' या 'पापा' बोलने पर। बार-बार बच्चे की योग्यता का परीक्षण मित्रों और रिश्तेदारों के सामने किया जाता है। जब बच्चा सही जवाब देता है तो माता-पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

जब बच्चे बड़े होते हैं और बड़ी कक्षाओं में पहुंचते हैं तो पढ़ाए जाने वाले विषयों की संख्या बढ़ जाती है। परीक्षा की संख्या और आवृत्ति भी। तीन महीने में एक बार छमाही और वार्षिक परीक्षा होती है। इसी समय बच्चे परीक्षा की अवधारणा पर प्रश्न करते हैं कि सर्वप्रथम किसने परीक्षा के बारे में सोचा था? क्या वास्तव में हमें इनकी जरूरत है? क्या आवश्यक ज्ञान देकर बाकी व्यक्ति पर छोड़ देना ही काफी नहीं है? यह समस्या की ओर देखने का उचित ढंग लग सकता है पर किसी सभ्य समाज में ऐसा होना व्यावहारिक नहीं है।

परीक्षा की जरूरत

आइए, समाचार पत्रों की कुछ दिलचस्प एवं मुख्य खबरों पर नजर डालते हैं :

1. उत्तरांचल में 1,20,000 से भी ज्यादा छात्रों ने लोक सेवा आयोग (पी.सी.एस.) की प्रवेश परीक्षा दी।
2. मैनेजमेंट कॉलेज में 26,000 छात्रों ने 120 सीटों के लिए आवेदन किया।
3. 1,00,000 से भी ज्यादा छात्र सामान्य प्रवेश परीक्षा (कैट) के लिए बैठे।

उत्तरांचल 13 जिलों वाला एक छोटा राज्य है। इन जिलों में काम करने के लिए कितने युवाओं को लोक सेवा आयोग में भर्ती किया जा सकता है? 1,20,000 छात्रों में से बेहतरीन उम्मीदवारों का चयन करने का परीक्षा से बेहतर और कोई तरीका हो सकता है क्या?

मैनेजमेंट कॉलेज में विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए 120 सीटें हैं। क्या इनमें 26,000 उम्मीदवारों को जगह मिल सकती है? कैट को इसलिए शुरू किया गया था ताकि प्रतिष्ठित संस्थानों में केवल सबसे प्रतिभाशाली उम्मीदवार ही प्रवेश ले पाएं, जो देश के वाणिज्य और उद्योग का भविष्य में प्रशासन संभालेंगे।

बढ़ती हुई जनसंख्या और उच्च पदों के लिए बढ़ती हुई आकांक्षाओं के कारण बेहतरीन उम्मीदवार का चयन करने के लिए परीक्षा ही एकमात्र विकल्प है। वास्तव में परीक्षा जरूरत है, मुसीबत नहीं, जैसा कि बहुत से छात्र सोचते हैं।

हिम्मतवर की जीत

चार्ल्स डार्विन ने कहा था कि प्रत्येक क्षेत्र में हर समय चयन की एक स्वाभाविक प्रक्रिया चलती रहती है। चयन की दौड़ में ताकतवर की जीत होती है। ऐसा होते हुए हम हर जगह और हर दिन देखते हैं। जीवन के प्रत्येक पहलू में, बेहतरीन उत्पाद और सेवा प्रदान करने के लिए लोग एक-दूसरे से प्रतियोगिता करते हैं। इसके बदले में आम आदमी को मिलती है एक अच्छी जिंदगी। उत्कृष्ट लोगों के चयन करने की प्रक्रिया में परीक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जब भी कोई प्रतियोगिता होती है तो तनाव होना स्वाभाविक है। इस तनाव को दूर करने के लिए परीक्षा से भागना कोई विकल्प नहीं है। प्रतियोगिता जीवन का एक हिस्सा है और इसे अलग नहीं किया जा सकता है। इससे जुड़े तनाव का सामना करने के लिए, परीक्षा के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने और कैसे अच्छी तरह से प्रतियोगिता कर सकते हैं, में समाधान निहित है। अगर सही ढंग से परीक्षा से निबटा जाए तो यह जीवन में अधिक प्रतियोगी होने की दिशा में उठा एक सही कदम होगा।

अवरोध या सोपान

कई युवा परीक्षा को उनकी राह में पैदा की गई रुकावटें मानते हैं। उनके लिए प्रत्येक परीक्षा एक अवरोध होती है। इन रुकावटों को इस तरह रखा गया है कि हर कदम पर इनसे सामना करना पड़ता है। कुछ भाग्यशाली ही अंतिम चरण तक पहुंच पाते हैं। ऐसा ही कुछ युवा सोचते हैं।

परीक्षा के प्रति यह सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं है। हमें परीक्षा को रुकावट मानने के बजाय सोपान मानना चाहिए। समान स्तर पर रुकावटें आती हैं। यहां तक कि अंतिम रेखा भी समान स्तर पर है। असल जिंदगी में जो कामयाब होते हैं, वे एक ही स्तर पर नहीं रहते। वे वैसे ही बढ़ते रहते हैं, जैसे कि कोई एक-एक कदम कर सीढ़ी चढ़ता है। इसलिए, आगे बढ़ने के लिए हमें परीक्षाओं को एक सीढ़ी मानना चाहिए। वैसे ही जैसे हम एक-एक करके सीढ़ी चढ़ते हैं।

स्कूल में कैसे बच्चा प्रगति करता है—वह नर्सरी से पहली कक्षा में आता है, फिर दूसरी में और इस तरह आगे बढ़ता जाता है। सीढ़ी चढ़ने जैसे ही प्रत्येक छात्र आगे बढ़ता है। स्कूल खत्म होने के स्तर पर अनेक विकल्प होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार एक विकल्प चुनता है।

कई कदम चढ़ने में आसान होते हैं, कई नहीं। केवल हिम्मतवर ही तेजी से आगे बढ़ता है। इसलिए हमें सदैव इस बात को समझना चाहिए कि परीक्षा रुकावट नहीं होती वरन् सफलता की ओर ले जाने वाली सीढ़ी होती है।

जीवन एक परीक्षा है

रोजमर्रा की शैक्षिक और व्यावसायिक जिंदगी में आनी वाली औपचारिक परीक्षा को उत्तीर्ण करना ही हमारा उद्देश्य होता है। पर हमें इस बात को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि धीरे-धीरे सबको यह अहसास हो जाता है कि सम्मानित ढंग से जीना भी एक तरह की परीक्षा है। रोज अनेक व्यक्तियों द्वारा किसी एक व्यक्ति की परीक्षा होती है। हमारी सफलता हमारे दृष्टिकोण पर आधारित होती है।

जब हम सकारात्मक ढंग से सोचते हैं और हर अवरोध का सामना सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए करते हैं, तो हम सफलता प्राप्त कर लेते हैं। जब हम संशयों में घिरे होते हैं तो अड़चनें आती हैं। इसी तरह, परीक्षा भवन में प्रवेश करते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना सीखना महत्वपूर्ण है। हमारा दृष्टिकोण और आत्मविश्वास ही हमें सदैव सफलता की ओर ले जाएगा।

परीक्षा जीवन का हिस्सा होती है

स्थिति की ओर सकारात्मक ढंग से देखने के लिए परीक्षा को जीवन के एक हिस्से के रूप में स्वीकार लें। इस स्थिति में दो तत्त्व सम्मिलित हैं : पहला जो व्यक्ति परीक्षा देता है और दूसरा परीक्षा। परीक्षा देने से पहले हमें हर बात को समझ लेना चाहिए। अपनी योग्यता और कमजोरियों को समझना भी जरूरी है। जब बातें स्पष्ट होती हैं तो सफलता मिलती है।

ध्यान देने योग्य बातें—

- ◆ परीक्षा ज्ञान और क्षमता को जांचने की एक औपचारिक प्रक्रिया है।
- ◆ परीक्षा समाज की जरूरत है।
- ◆ हिम्मतवर की जीत होती है।
- ◆ परीक्षा हिम्मतवर का चयन करने में मदद करती है।
- ◆ परीक्षा रुकावट नहीं वरन् सोपान है।
- ◆ जीवन में कदम दर कदम एक परीक्षा है।
- ◆ परीक्षा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण सफलता दिलाता है।

मंत्र 1: दूसरा चरण

आप कहां जा रहे हैं?

क्या आप जानते हैं कि कहां जा रहे हैं? अधिकतर छात्र नहीं जानते। वे केवल अगली कक्षा में जाने के लिए पढ़ाई करते हैं, क्योंकि वे अशिक्षित नहीं कहलाना चाहते। यह प्रमाणित करने के लिए कि वे भी स्कूल और कॉलेज में पढ़े हैं, सर्टिफिकेट और डिग्रियां प्राप्त करते हैं।

क्या आप फुटबॉल या हॉकी के मैदान में दोनों तरफ गोल न होने की कल्पना कर सकते हैं? फिर खिलाड़ी खेलेंगे कैसे? क्या वे केवल एक छोर से दूसरे छोर तक गेंद को यूँ ही फेंकते रहेंगे? हम विजेता का निर्णय कैसे करेंगे? इन मैदानों में बिना गोल के भागते खिलाड़ियों की तरह कई छात्र गेंद के साथ उद्देश्यहीन दौड़ते रहते हैं। उन्हें एक भी गोल नहीं मिलता, क्योंकि उनके सामने कोई लक्ष्य ही नहीं होता है।

लक्ष्य की कमी

उपलब्धि प्राप्त न कर पाने का मुख्य कारण है जीवन में कोई लक्ष्य न होना। कई युवा यह मानकर चलते हैं कि जब वे उचित आयु में पहुंच जाएंगे तो उन्हें स्वयं लक्ष्य मिल जाएगा। फिर वे जीत जाएंगे। दुर्भाग्यवश, ऐसा कभी होता नहीं है। बच्चा जब पढ़ना शुरू करता है तो उसका एक लक्ष्य होना चाहिए, जिसकी ओर वह धीरे-धीरे बढ़ सके। अगर कोई लक्ष्य नहीं होगा तो आप कहीं नहीं पहुंच सकेंगे। जैसे बिना पतवार के नाव अपनी दिशा तय नहीं कर सकती, वैसे ही जीवन में लक्ष्य तय किए बिना हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जो लोग जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करके आगे बढ़ते हैं, वे उन लोगों की अपेक्षा जिनका कोई लक्ष्य नहीं होता है, ज्यादा कामयाब होते हैं। यह सच बार-बार प्रमाणित हो चुका है।

हमें लक्ष्य की जरूरत क्यों है ?

हमें लक्ष्य की जरूरत इसलिए है क्योंकि वे बताते हैं कि हमें कहां जाना है। जब तक हमें यह न पता हो कि हमें कहां जाना है? हम वहां तक नहीं पहुंच सकते हैं।

लक्ष्य निर्धारित करने का सबसे अहम पहलू यह है कि जब हम अपने दिमाग में एक लक्ष्य बना लेते हैं तो हम उसके बारे में सोचते रहते हैं और हमारा दिमाग एक सफल प्रक्रिया का स्राव करता है। यह सफल प्रक्रिया उन व्यक्तियों और स्थितियों को हमारी ओर आकर्षित करती है जो लक्ष्य के साथ जुड़े होते हैं। जब कोई व्यक्ति विदेश में कोई विशिष्ट अध्ययन करने की सोचता है और लक्ष्य के रूप में मन के अंदर उसे ज्वलंत इच्छा के रूप में धारण कर लेता है, तो धीरे-धीरे वह उसके बारे में सारी सूचनाएं एकत्र करना शुरू कर देता है। कौन से विश्वविद्यालय में वह कोर्स होता है? फीस कितनी है? प्रवेश के लिए क्या चाहिए? स्कॉलरशिप उपलब्ध है कि नहीं? कोर्स के दौरान और बाद में रोजगार मिलने की क्या संभावना है? इसके बारे में जानकारी हासिल करता है। अगर लक्ष्य न हो तो यह सब होना संभव ही नहीं है।

लक्ष्य कैसा होना चाहिए?

अलग-अलग चीजों के लिए व्यक्ति के अनेक लक्ष्य हो सकते हैं। हालांकि, बतौर छात्र के लिए शैक्षिक लक्ष्य ही ठीक होता है। सबसे पहले मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिए। यह ऐसा ही हो सकता है जैसे आई.आई.टी. से इंजीनियरिंग डिग्री करने के साथ-साथ किसी प्रतिष्ठित मैनेजमेंट कॉलेज से एम.बी.ए. करना।

एक बार जब मुख्य लक्ष्य तय हो जाते हैं तो छोटे-छोटे लक्ष्य तय किए जा सकते हैं, जो आपको मुख्य लक्ष्य की ओर ले जाएंगे। जैसे, मैं प्रवेश परीक्षा की तैयारी कैसे करूं? क्या उसके लिए मैं स्वयं पढ़ूं या किसी अच्छे कोचिंग स्कूल में दाखिला लूं? कौन सा संस्थान ठीक रहेगा? कौन सा समय ठीक रहेगा?

यहां तक कि छोटे-छोटे लक्ष्य को भी बांटा जा सकता है। पांच वर्ष में पूरा होने वाला एक दीर्घकालीन लक्ष्य हो सकता है। प्रत्येक वर्ष के लिए छोटा-छोटा लक्ष्य हो सकता है। छोटे-छोटे लक्ष्य को हर उपलब्धि पाने के लिए महीने या सप्ताह के अनुसार तय किया जा सकता है। निष्ठावान व्यक्ति रोज सुबह तय किए गए लक्ष्य को पूरा करने में जुटा रहता है। कदम दर कदम जैसे कोई दूरी को तय करता है, लंबी दूरी बिना थके दूर हो जाती है। लक्ष्य तय करने का यही जादू है।

लक्ष्य तय करने का आधार

लक्ष्य तय करते समय हमेशा बड़े-बड़े सपने देखने चाहिए। छोटे लक्ष्य छोटे परिणाम दिखाते हैं। बड़े लक्ष्य से बड़े परिणाम मिलते हैं।